

Para 5

Sipara 5 of 30 · 124 Ayahs · Translation: Hindi

An-Nisaa

24

وَالْمُحْصَنَاتُ مِنَ النِّسَاءِ إِلَّا مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ ۚ كَتَبَ اللَّهُ عَلَيْكُمْ ۚ وَأُحِلَّ لَكُمْ
مَا وَرَاءَ ذَلِكَ أَنْ تَبْتَغُوا ۚ بِأَمْوَالِكُمْ مُحْصِنِينَ غَيْرَ مُسْفِحِينَ ۚ فَمَا اسْتَمْتَعْتُمْ بِهِ ۚ
مِنْهُمْ فَأَتُوهُمْ أَجُورَهُنَّ فَرِيضَةً ۚ ۚ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا تَرْضَيْتُمْ بِهِ ۚ مِنْ ۚ بَعْدِ
الْفَرِيضَةِ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ۚ

और शौहरदार औरतें मगर वह औरतें जो (जिहाद में कुफ़ार से) तुम्हारे कब्जे में आ जाएं हराम नहीं (ये) खुदा का तहरीरी हुक्म (है जो) तुमपर (फ़र्ज किया गया) है और उन औरतों के सिवा (और औरतें) तुम्हारे लिए जायज़ हैं बशर्ते कि बदकारी व ज़िना नहीं बल्कि तुम इफ़्त या पाकदामिनी की ग़रज़ से अपने माल (व मेहर) के बदले (निकाह करना) चाहो हों जिन औरतों से तुमने मुताअ किया हो तो उन्हें जो मेहर मुअय्यन किया है दे दो और मेहर के मुकरर होने के बाद अगर आपस में (कम व बेश पर) राज़ी हो जाओ तो उसमें तुमपर कुछ गुनाह नहीं है बेशक खुदा (हर चीज़ से) वाक्फ़ और मसलेहतों का पहचानने वाला है

وَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ مِنْكُمْ طَوْلاً أَنْ يَنْكِحَ الْمُحْصَنَاتِ الْمُؤْمِنَاتِ فَمِنْ مَّا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ
 مِنْ فَتَيَاتِكُمُ الْمُؤْمِنَاتِ ۚ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِإِيمَانِكُمْ ۚ بَعْضُكُم مِّنْ بَعْضٍ ۚ ۚ
 فَأَنْكِحُوهُنَّ بِأَذْنِ أَهْلِهِنَّ وَءَاتُوهُنَّ أَجُورَهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ مُحْصَنَاتٍ غَيْرَ مُسَفِّحَاتٍ ۚ
 وَلَا مُتَّخِذَاتِ أَخْدَانٍ ۚ ۚ فَإِذَا أُحْصِنَ فَإِنَّ أَتَيْنَ بِفُحْشَةٍ ۚ فَعَلَيْهِنَّ نِصْفُ مَا عَلَى
 الْمُحْصَنَاتِ مِنَ الْعَذَابِ ۚ ۚ ذَلِكَ لِمَنْ خَشِيَ الْعَنَتَ مِنْكُمْ ۚ وَأَنْ تَصْبِرُوا ۚ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ
 وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۚ

और तुममें से जो शख्स आज़ाद इफ़्तदार औरतों से निकाह करने की माली हैसियत से कुदरत न रखता हो तो वह तुम्हारी उन मोमिना लौन्डियों से जो तुम्हारे कब्ज़े में हैं निकाह कर सकता है और खुदा तुम्हारे ईमान से खूब वाकिफ़ है (ईमान की हैसियत से तो) तुममें एक दूसरे का हमजिन्स है पस (बे ताम्मुल) उनके मालिकों की इजाज़त से लौन्डियों से निकाह करो और उनका मेहर हुस्ने सुलूक से दे दो मगर उन्हीं (लौन्डियो) से निकाह करो जो इफ़्तद के साथ तुम्हारी पाबन्द रहें न तो खुले आम ज़िना करना चाहें और न चोरी छिपे से आशनाई फिर जब तुम्हारी पाबन्द हो चुकी उसके बाद कोई बदकारी करे तो जो सज़ा आज़ाद बीवियों को दी जाती है उसकी आधी (सज़ा) लौन्डियों को दी जाएगी (और लौन्डियों) से निकाह कर भी सकता है तो वह शख्स जिसको ज़िना में मुब्तिला हो जाने का खौफ़ हो और सब करे तो तुम्हारे हक़ में ज्यादा बेहतर है और खुदा बख़्शने वाला मेहरबान है

يُرِيدُ اللَّهُ لِيُبَيِّنَ لَكُمْ وَيَهْدِيَكُمْ سُنْنَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَيَتُوبَ عَلَيْكُمْ ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ
 حَكِيمٌ ۚ

खुदा तो ये चाहता है कि (अपने) एहकाम तुम लोगों से साफ़ साफ़ बयान कर दे और जो (अच्छे) लोग तुमसे पहले गुज़र चुके हैं उनके तरीक़े पर चला दे और तुम्हारी तौबा कुबूल करे और खुदा तो (हर चीज़ से) वाकिफ़ और हिकमत वाला है

وَاللَّهُ يُرِيدُ أَنْ يَتُوبَ عَلَيْكُمْ وَيُرِيدُ الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ الشَّهَوَاتِ أَنْ تَمِيلُوا ۚ ۚ مِيلًا
 عَظِيمًا ۚ

और खुदा तो चाहता है कि तुम्हारी तौबा कुबूल

يُرِيدُ اللَّهُ أَنْ يُخَفِّفَ عَنْكُمْ ۖ وَخُلِقَ الْإِنْسَانُ ضَعِيفًاۙ

करे और जो लोग नफ़सियानी ख्वाहिश के पीछे पड़े हैं वह ये चाहते हैं कि तुम लोग (राहे हक़ से) बहुत दूर हट जाओ और खुदा चाहता है कि तुमसे बार में तख़फ़ीफ़ कर दें क्योंकि आदमी तो बहुत कमज़ोर पैदा किया गया है

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ لَا تَأْكُلُوا ۙ أَمْوَالَكُم بَيْنَكُم بِالْبَاطِلِ إِلَّا أَنْ تَكُونَ تِجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ ۙ مِنْكُمْ ۚ وَلَا تَقْتُلُوا ۙ أَنْفُسَكُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيمًاۙ

ए ईमानवालों आपस में एक दूसरे का माल नाहक़ न खा जाया करो लेकिन (हाँ) तुम लोगों की बाहमी रज़ामन्दी से त़िज़ारत हो (और उसमें एक दूसरे का माल हो तो मुज़ाएक़ा नहीं) और अपना ग़ला आप घूट के अपनी जान न दो (क्योंकि) खुदा तो ज़रूर तुम्हारे हाल पर मेहरबान है

وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ عُدُوًّاۙ ا ۙ وَظُلْمًاۙ ا ۙ فَسَوْفَ نُصْلِيهِ نَارًاۙ ا ۙ وَكَانَ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا

और जो शख्स जोरो ज़ुल्म से नाहक़ ऐसा करेगा (खुदकुशी करेगा) तो (याद रहे कि) हम बहुत जल्द उसको जहन्नुम की आग में झोंक देंगे यह खुदा के लिये आसान है

إِنْ تَجْتَنِبُوا ۙ كَبَائِرَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ نُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَنُدْخِلَكُمْ مُدْخَلًاۙ ا ۙ كَرِيمًاۙ

जिन कामों की तुम्हें मनाही की जाती है अगर उनमें से तुम गुनाहे कबीरा से बचते रहे तो हम तुम्हारे (सग़ीरा) गुनाहों से भी दरगुज़र करेंगे और तुमको बहुत अच्छी इज़ज़त की जगह पहुंचा देंगे

وَلَا تَتَمَنَّوْا ۙ مَا فَضَّلَ اللَّهُ بِهِۦ ۙ بَعْضَكُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ ۚ لِلرِّجَالِ نَصِيبٌ ۙ مِّمَّا اكْتَسَبُوا ۚ وَلِلنِّسَاءِ نَصِيبٌ ۙ مِّمَّا اكْتَسَبْنَ ۚ وَسَأَلُوا ۙ اللَّهَ مِنْ فَضْلِهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًاۙ

और खुदा ने जो तुममें से एक दूसरे पर तरज़ीह दी है उसकी हवस न करो (क्योंकि फ़ज़ीलत तो आमाल से है) मर्दों को अपने किए का हिस्सा है और औरतों को अपने किए का हिस्सा और ये और बात है कि तुम खुदा से उसके फ़ज़ल व करम की ख्वाहिश करो खुदा तो हर चीज़े से वाकिफ़ है

وَلِكُلٍّ ۙ جَعَلْنَا مَوْلَىٰ مِمَّا تَرَكَ الْوَلَدَانِ وَالْأَقْرَبُونَ ۚ وَالَّذِينَ عَقَدَتْ أَيْمَنُكُمْ فَأَتُوهُمْ
نَصِيبَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدًا

और मां बाप (या) और कराबतदार (गरज़) तो शख्स जो तरका छोड़ जाए हमने हर एक का (वाली) वारिस मुकर्रर कर दिया है और जिन लोगों से तुमने मुस्तहकम (पक्का) एहद किया है उनका मुकर्रर हिस्सा भी तुम दे दो बेशक खुदा तो हर चीज़ पर गवाह है

الرِّجَالُ قَوُّمُونَ عَلَى النِّسَاءِ بِمَا فَضَّلَ اللَّهُ بَعْضَهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ ۚ وَبِمَا أَنْفَقُوا ۚ مِنْ
أَمْوَالِهِمْ ۚ فَالصَّالِحَاتُ قَنِتٌ حَفِظَتْ ۚ لِلْغَيْبِ بِمَا حَفِظَ اللَّهُ ۚ وَالَّتِي تَخَافُونَ
نُشُوزَهُنَّ فَعِظُوهُنَّ وَاهْجُرُوهُنَّ فِي الْمَضَاجِعِ وَأَضْرِبُوهُنَّ ۚ فَإِنْ أَطَعْنَكُمْ فَلَا
تَبْغُوا ۚ عَلَيْهِنَّ سَبِيلًا ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا كَبِيرًا ۚ

मर्दों का औरतों पर क़ाबू है क्योंकि (एक तो) खुदा ने बाज़ आदमियों (मर्द) को बाज़ अदमियों (औरत) पर फ़ज़ीलत दी है और (इसके अलावा) चूंकि मर्दों ने औरतों पर अपना माल खर्च किया है पस नेक बख्त बीवियों तो शौहरों की ताबेदारी करती हैं (और) उनके पीठ पीछे जिस तरह खुदा ने हिफ़ाज़त की वह भी (हर चीज़ की) हिफ़ाज़त करती है और वह औरतें जिनके नाफरमान सरकश होने का तुम्हें अन्देशा हो तो पहले उन्हें समझाओ और (उसपर न माने तो) तुम उनके साथ सोना छोड़ दो और (इससे भी न माने तो) मारो मगर इतना कि खून न निकले और कोई अज़्रो न (टूटे) पस अगर वह तुम्हारी मुतीइ हो जाएं तो तुम भी उनके नुक़सान की राह न ढूंढो खुदा तो ज़रूर सबसे बरतर बुजुर्ग है

وَإِنْ خِفْتُمْ شِقَاقَ بَيْنِهِمَا فَأَبْعَثُوا ۚ حَكَمًا ۚ مِّنْ أَهْلِهِ ۚ وَحَكَمًا ۚ مِّنْ أَهْلِهَا ۚ إِنْ يُرِيدَا
إِصْلَاحًا ۚ يُوَفِّقِ اللَّهُ بَيْنَهُمَا ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا خَبِيرًا ۚ

और ऐ हुक्काम (वक्त) अगर तुम्हें मियाँ बीवी की पूरी नाइत्तेफ़ाक़ी का तरफ़ैन से अन्देशा हो तो एक सालिस (पन्च) मर्द के कुनबे में से एक और सालिस औरत के कुनबे में मुकर्रर करो अगर ये दोनों सालिस दोनों में मेल करा देना चाहें तो खुदा उन दोनों के दरमियान उसका अच्छा बन्दोबस्त कर देगा खुदा तो बेशक वाक्फ़ि व ख़बरदार है

﴿۱﴾ وَأَعْبُدُوا اللَّهَ وَلَا تُشْرِكُوا بِهِ ﴿۲﴾ شَيْءًا ﴿۳﴾ وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا ﴿۴﴾ وَبِذِي الْقُرْبَىٰ
وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينِ وَالْجَارِ ذِي الْقُرْبَىٰ وَالْجَارِ الْجُنُبِ وَالصَّاحِبِ بِالْجَنَّةِ ﴿۵﴾
وَابْنِ السَّبِيلِ وَمَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ ﴿۶﴾ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ مُخْتَالًا ﴿۷﴾ فَخُورًا

और खुदा ही की इबादत करो और किसी को उसका शरीक न बनाओ और माँ बाप और कराबतदारों और यतीमों और मोहताजों और रिश्तेदार पड़ोसियों और अजनबी पड़ोसियों और पहलू में बैठने वाले मुसाहिबों और पड़ोसियों और ज़र खरीद लौन्डी और गुलाम के साथ एहसान करो बेशक खुदा अकड़ के चलने वालों और शेखीबाजों को दोस्त नहीं रखता

الَّذِينَ يَبْخُلُونَ وَيَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ وَيَكْتُمُونَ مَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ ﴿۱﴾
وَأَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا ﴿۲﴾ مُهِينًا ﴿۳﴾

ये वह लोग हैं जो खुद तो बुखल करते ही हैं और लोगों को भी बुखल का हुक्म देते हैं और जो माल खुदा ने अपने फ़ज़ल व (करम) से उन्हें दिया है उसे छिपाते हैं और हमने तो कुफ़राने नेअमत करने वालों के वास्ते सख्त ज़िल्लत का अज़ाब तैयार कर रखा है

وَالَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ رِئَاءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْآخِرِ ﴿۱﴾ وَمَنْ
يَكُنِ الشَّيْطَانُ لَهُ ﴿۲﴾ قَرِينًا ﴿۳﴾ فَسَاءَ قَرِينًا ﴿۴﴾

और जो लोग महज़ लोगों को दिखाने के वास्ते अपने माल खर्च करते हैं और न खुदा ही पर ईमान रखते हैं और न रोज़े आखिरत पर खुदा भी उनके साथ नहीं क्योंकि उनका साथी तो शैतान है और जिसका साथी शैतान हो तो क्या ही बुरा साथी है

وَمَاذَا عَلَيْهِمْ لَوْ ءَامَنُوا ﴿۱﴾ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَأَنْفَقُوا ﴿۲﴾ مِمَّا رَزَقَهُمُ اللَّهُ ﴿۳﴾ وَكَانَ
اللَّهُ بِهِمْ عَلِيمًا

अगर ये लोग खुदा और रोज़े आखिरत पर ईमान लाते और जो कुछ खुदा ने उन्हें दिया है उसमें से राहे खुदा में खर्च करते तो उन पर क्या आफ़त आ जाती और खुदा तो उनसे खूब वाकिफ़ है

إِنَّ اللَّهَ لَا يَظْلِمُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ ۚ ۚ وَإِنْ تَكَ حَسَنَةً ۖ يَظْعِفْهَا وَيُؤْتِ مِنْ لَدُنْهُ أَجْرًا عَظِيمًا ۚ

खुदा तो हरगिज़ ज़रा बराबर भी ज़ुल्म नहीं करता बल्कि अगर ज़रा बराबर भी किसी की कोई नेकी हो तो उसको दूना करता है और अपनी तरफ़ से बड़ा सवाब अता फ़रमाता है

فَكَيْفَ إِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ بِشَهِيدٍ ۖ وَجِئْنَا بِكَ عَلَى هَؤُلَاءِ شَهِيدًا ۚ

(ख़ैर दुनिया में तो जो चाहे करें) भला उस वक्त क्या हाल होगा जब हम हर गिरोह के गवाह तलब करेंगे और (मोहम्मद) तुमको उन सब पर गवाह की हैसियत में तलब करेंगे

يَوْمَئِذٍ ۚ يَوْمُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ وَعَصَوْا ۚ الرَّسُولَ لَوْ تُسَوَّىٰ بِهِمُ الْأَرْضُ وَلَا يَكْتُمُونَ اللَّهَ حَدِيثًا ۚ

उस दिन जिन लोगों ने कुफ़्र इस्तेयार किया और रसूल की नाफ़रमानी की ये आरजू करेंगे कि काश (वह पेवन्दे खाक हो जाते) और उनके ऊपर से ज़मीन बराबर कर दी जाती और अफ़सोस ये लोग खुदा से कोई बात उस दिन छुपा भी न सकेंगे

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ لَا تَقْرَبُوا ۚ الصَّلَاةَ وَأَنْتُمْ سُكَرَىٰ حَتَّىٰ تَعْلَمُوا ۚ مَا تَقُولُونَ وَلَا جُنُبًا إِلَّا عَابِرِي سَبِيلٍ حَتَّىٰ تَغْتَسِلُوا ۚ ۚ وَإِنْ كُنْتُمْ مَرْضَىٰ أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ أَوْ جَاءَ أَحَدٌ مِّنْكُم مِّنَ الْغَائِطِ أَوْ لَمَسْتُمُ النِّسَاءَ فَلَمْ تَجِدُوا ۚ مَاءً ۚ فَتَيَمَّمُوا ۚ صَعِيدًا طَيِّبًا ۚ فَامْسَحُوا ۚ بِوُجُوهِكُمْ وَأَيْدِيكُمْ ۚ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَفُوًّا غَفُورًا

ऐ ईमानदारों तुम नशे की हालत में नमाज़ के करीब न जाओ ताकि तुम जो कुछ मुंह से कहो समझो भी तो और न जिनाबत की हालत में यहाँ तक कि गुस्ल कर लो मगर राह गुज़र में हो (और गुस्ल मुमकिन नहीं है तो अलबत्ता ज़रूरत नहीं) बल्कि अगर तुम मरीज़ हो और पानी नुक़सान करे या सफ़र में हो तुममें से किसी का पैखाना निकल आए या औरतों से सोहबत की हो और तुमको पानी न मयस्सर हो (कि तहारत करो) तो पाक मिट्टी पर तैमूम कर लो और (उस का तरीका ये है कि) अपने मुंह और हाथों पर मिट्टी भरा हाथ फेरो तो बेशक खुदा माफ़ करने वाला है (और) बख़्श ने वाला है

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا[؟] نَصِيبًا[؟] مِّنَ الْكِتَابِ يَشْتُرُونَ الضَّلَلَةَ وَيُرِيدُونَ أَن تَضِلُّوا[؟] السَّبِيلَ

(ऐ रसूल) क्या तूम्ने उन लोगों के हाल पर नज़र नहीं की जिन्हें किताबे खुदा का कुछ हिस्सा दिया गया था (मगर) वह लोग (हिदायत के बदले) गुमराही खरीदने लगे उनकी ऐन मुराद यह है कि तुम भी राहे रास्त से बहक जाओ

وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِأَعْدَائِكُمْ[؟] وَكَفَى بِاللَّهِ وَلِيًّا[؟] وَكَفَى بِاللَّهِ نَصِيرًا[؟]

और खुदा तुम्हारे दुश्मनों से खूब वाकिफ़ है और दोस्ती के लिए बस खुदा काफ़ी है और हिमायत के वास्ते भी खुदा ही काफ़ी है

مِّنَ الَّذِينَ هَادُوا[؟] يُحَرِّفُونَ الْكَلِمَ عَن مَّوَاضِعِهِ[؟] وَيَقُولُونَ سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا
وَأَسْمَعُ غَيْرَ مُسْمِعٍ[؟] وَرُعِنَا لِيًّا[؟] بِالسِّنْتِهِمْ وَطَعْنًا[؟] فِي الدِّينِ[؟] وَلَوْ أَنَّهُمْ قَالُوا[؟]
سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا وَأَسْمَعُ وَأَنْظُرْنَا لَكَانَ خَيْرًا[؟] لَهُمْ وَأَقْوَمَ وَلَكِن لَّعَنَهُمُ اللَّهُ بِكُفْرِهِمْ
فَلَا يُؤْمِنُونَ إِلَّا قَلِيلًا[؟]

(ऐ रसूल) यहूद से कुछ लोग ऐसे भी हैं जो बातों में उनके महल व मौक़े से हेर फेर डाल देते हैं और अपनी ज़बानों को मरोड़कर और दीन पर तानाज़नी की राह से तुमसे समेअना व असैना (हमने सुना और नाफ़रमानी की) और वसमअ गैरा मुसमइन (तुम मेरी सुनो खुदा तुमको न सुनवाए) राअना मेरा ख्याल करो मेरे चरवाहे कहा करते हैं और अगर वह इसके बदले समेअना व अताअना (हमने सुना और माना) और इसमाआ (मेरी सुनो) और (राअना) के एवज़ उनजुरना (हमपर निगाह रख) कहते तो उनके हक़ में कहीं बेहतर होता और बिल्कुल सीधी बात थी मगर उनपर तो उनके कुफ़्र की वजह से खुदा की फ़िटकार है

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ أُوتُوا[؟] الْكِتَابَ ءَامِنُوا[؟] بِمَا نَزَّلْنَا مُصَدِّقًا[؟] لِّمَا مَعَكُمْ مِّن قَبْلِ أَن نَّطْمِسَ وُجُوهًا[؟] فَنَرُدَّهَا عَلَىٰ أَدْبَارِهَا أَوْ نَلْعَنَهُمْ كَمَا لَعَنَّا أَصْحَابَ السَّبْتِ[؟]
وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ مَفْعُولًا

पस उनमें से चन्द लोगों के सिवा और लोग ईमान ही न लाएंगे ऐ अहले किताब जो (किताब) हमने नाज़िल की है और उस (किताब) की भी तस्दीक़ करती है जो तुम्हारे पास है उस पर ईमान लाओ मगर क़बल इसके कि हम कुछ लोगों के चेहरे बिगाड़कर उनके पुश्त की तरफ़ फेर दें या जिस तरह हमने असहाबे सबत (हफ्ते वालों) पर फिटकार बरसायी वैसी ही फिटकार उनपर भी करें

إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُشْرَكَ بِهِ ۖ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَلِكَ لِمَنْ يَشَاءُ ۗ وَمَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ افْتَرَىٰ إِثْمًا عَظِيمًا

और खुदा का हुक्म किया कराया हुआ काम समझो खुदा उस जुर्म को तो अलबत्ता नहीं माफ़ करता कि उसके साथ शिर्क किया जाए हों उसके सिवा जो गुनाह हो जिसको चाहे माफ़ कर दे और जिसने (किसी को) खुदा का शरीक बनाया तो उसने बड़े गुनाह का तूफान बाँधा

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يَزْكُونَ أَنْفُسَهُمْ ۖ بَلِ اللَّهُ يُزَكِّي مَن يَشَاءُ وَلَا يُظْلَمُونَ فَتِيلًا

(ऐ रसूल) क्या तुमने उन लोगों के हाल पर नज़र नहीं की जो आप बड़े मुक़द्दस बनते हैं (मगर उससे क्या होता है) बल्कि खुदा जिसे चाहता है मुक़द्दस बनाता है और ज़ुल्म तो किसी पर धागे के बराबर हो ही गा नहीं

أَنْظُرْ كَيْفَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ ۖ وَكَفَىٰ بِهِ ۖ إِثْمًا ۖ مُّبِينًا

(ऐ रसूल) ज़रा देखो तो ये लोग खुदा पर कैसे कैसे झूठ तूफ़ान जोड़ते हैं और खुल्लम खुल्ला गुनाह के वास्ते तो यही काफ़ी है

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا ۖ نَصِيبًا ۖ مِّنَ الْكِتَابِ يُؤْمِنُونَ بِالْجِبْتِ وَالطُّغُوتِ وَيَقُولُونَ لِلَّذِينَ كَفَرُوا ۖ هَؤُلَاءِ أَهْدَىٰ مِنَ الَّذِينَ ءَامَنُوا ۖ سَبِيلًا

(ऐ रसूल) क्या तुमने उन लोगों के (हाल पर) नज़र नहीं की जिन्हें किताबे खुदा का कुछ हिस्सा दिया गया था और (फिर) शैतान और बुतों का कलमा पढ़ने लगे और जिन लोगों ने कुफ़्र इख्तेयार किया है उनकी निस्बत कहने लगे कि ये तो ईमान लाने वालों से ज्यादा राहे रास्त पर हैं

أَوَلَيْكَ الَّذِينَ لَعَنَهُمُ اللَّهُ ۖ وَمَن يَلْعَنِ اللَّهُ فَلَن تَجِدَ لَهُ ۖ نَصِيرًا

(ऐ रसूल) यही वह लोग हैं जिनपर खुदा ने लानत की है और जिस पर खुदा ने लानत की है तुम उनका मददगार हरगिज़ किसी को न पाओगे

أَمْ لَهُمْ نَصِيبٌ مِّنَ الْمُلْكِ فَإِذًا ۖ لَا يُؤْتُونَ النَّاسَ نَقِيرًا

क्या (दुनिया) की सल्तनत में कुछ उनका भी हिस्सा है कि इस वजह से लोगों को भूसी भर भी न देंगे

أَمْ يَحْسُدُونَ النَّاسَ عَلَى مَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ؟ فَقَدْ آتَيْنَا آلَ إِبْرَاهِيمَ
الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَآتَيْنَاهُمْ مُلْكًا عَظِيمًا ۝۱

या खुदा ने जो अपने फ़ज़ल से (तुम) लोगों को (कुरान) अता फ़रमाया है इसके रश्क पर चले जाते हैं (तो उसका क्या इलाज है) हमने तो इबराहीम की औलाद को किताब और अक्ल की बातें अता फ़रमायी हैं और उनको बहुत बड़ी सल्तनत भी दी

فَمِنْهُمْ مَنْ ءَامَنَ بِهِ ۝ وَمِنْهُمْ مَنْ صَدَّ عَنْهُ ۝ وَكَفَىٰ بِجَهَنَّمَ سَعِيرًا

फिर कुछ लोग तो इस (किताब) पर ईमान लाए और कुछ लोगों ने उससे इन्कार किया और इसकी सज़ा के लिए जहन्नुम की दहकती हुई आग काफ़ी है

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا ۝ بِآيَاتِنَا سَوْفَ نُصْلِيهِمْ نَارًا ۝ كُلَّمَا نَضِجَتْ جُلُودُهُمْ بَدَّلْنَاهُمْ
جُلُودًا غَيْرَهَا لِيَذُوقُوا ۝ الْعَذَابَ ۝ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَزِيزًا حَكِيمًا ۝۱

(याद रहे) कि जिन लोगों ने हमारी आयतों से इन्कार किया उन्हें ज़रूर अनक़रीब जहन्नुम की आग में झोंक देंगे (और जब उनकी खालें जल कर) जल जाएंगी तो हम उनके लिए दूसरी खालें बदल कर पैदा कर देंगे ताकि वह अच्छी तरह अज़ाब का मज़ा चखें बेशक खुदा हरचीज़ पर ग़ालिब और हिकमत वाला है

وَالَّذِينَ ءَامَنُوا ۝ وَعَمِلُوا ۝ الصَّالِحَاتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ ۝ تَجْرَىٰ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۝ لَّهُمْ فِيهَا أَزْوَاجٌ ۝ مُّطَهَّرَةٌ ۝ وَهُمْ فِيهَا ۝ وَنُدْخِلُهُمْ ظِلًّا ۝ ظَلِيلًا

और जो लोग ईमान लाए और अच्छे अच्छे काम किए हम उनको अनक़रीब ही (बेहिश्त के) ऐसे ऐसे (हरे भरे) बाग़ों में जा पहुंचाएंगे जिन के नीचे नहरें जारी होंगी और उनमें हमेशा रहेंगे वहां उनकी साफ़ सुथरी बीवियाँ होंगी और उन्हे घनी छाँव में ले जाकर रखेंगे

۝ إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَنْ تُؤَدُّوا ۝ الْأَمَانَاتِ إِلَىٰ أَهْلِهَا وَإِذَا حَكَمْتُمْ بَيْنَ النَّاسِ أَنْ
تَحْكُمُوا ۝ بِالْعَدْلِ ۝ إِنَّ اللَّهَ نِعِمَّا يَعِظُكُمْ بِهِ ۝ إِنَّ اللَّهَ كَانَ سَمِيعًا ۝ بَصِيرًا ۝۱

ऐ ईमानदारों खुदा तुम्हें हुक्म देता है कि लोगों की अमानतें अमानत रखने वालों के हवाले कर दो और जब लोगों के बाहमी झगड़ों का फैसला करने लगो तो इन्साफ़ से फैसला करो (खुदा तुमको) इसकी क्या ही अच्छी नसीहत करता है इसमें तो शक नहीं कि खुदा सबकी सुनता है (और सब कुछ) देखता है

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ أَطِيعُوا ۚ اللَّهَ وَأَطِيعُوا ۚ الرَّسُولَ وَأُو۟۟ا۟ لِّىَ ۚ الْأَمْرِ مِنكُمۡ ۚ فَإِن تَزَعَمْتُمْ فِى شَىْءٍ ۚ فَرُدُّوهُ إِلَى ۚ اللَّهِ وَالرَّسُولِ إِن كُنتُمْ تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ
الْءَاخِرِ ۚ ذَٰلِكَ خَيْرٌ ۚ وَأَحْسَنُ تَأْوِيلًا

ऐ ईमानदारों खुदा की इताअत करो और रसूल की और जो तुममें से साहेबाने हुकूमत हों उनकी इताअत करो और अगर तुम किसी बात में झगड़ा करो पस अगर तुम खुदा और रोज़े आखिरत पर ईमान रखते हो तो इस अम्र में खुदा और रसूल की तरफ़ रूजू करो यही तुम्हारे हक़ में बेहतर है और अन्जाम की राह से बहुत अच्छा है

أَلَمْ تَرَ إِلَى ۚ الَّذِينَ يَزْعُمُونَ أَنَّهُمْ ءَامَنُوا ۚ بِمَا ۚ أُنزِلَ إِلَيْكَ وَمَا ۚ أُنزِلَ مِن قَبْلِكَ يُرِيدُونَ
أَن يَتَحَاكَمُوا ۚ إِلَى ۚ الطُّغُوتِ وَقَدْ أُمِرُوا ۚ أَن يَكْفُرُوا ۚ بِهِ ۚ وَيُرِيدُ الشَّيْطٰنُ أَن
يُضِلَّهُمْ ضَلٰلًا ۚ بَعِيدًا ۚ

(ऐ रसूल) क्या तुमने उन लोगों की (हालत) पर नज़र नहीं की जो ये ख्याली पुलाओ पकाते हैं कि जो किताब तुझ पर नाज़िल की गयी और जो किताबें तुम से पहले नाज़िल की गयी (सब पर ईमान है) लाए और दिली तमन्ना ये है कि सरकशों को अपना हाकिम बनाएं हालाँकि उनको हुक्म दिया गया कि उसकी बात न मानें और शैतान तो यह चाहता है कि उन्हें बहका के बहुत दूर ले जाए

وَإِذَا قِيلَ لَهُمۡ تَعَالَوْا۟ ۚ إِلَى ۚ مَا ۚ أُنزِلَ إِلَيْهِ وَإِلَى ۚ الرَّسُولِ رَأَيْتَ ۚ الْمُتَفِقِينَ يَصُدُّونَ
عَنكَ صُدُودًا ۚ

और जब उनसे कहा जाता है कि खुदा ने जो किताब नाज़िल की है उसकी तरफ़ और रसूल की तरफ़ रूजू करो तो तुम मुनाफ़िक़ीन को देखते हो कि तुमसे किस तरह मुंह फेर लेते हैं

فَكَيْفَ إِذَا ۚ أَصَبَتْهُمْ مُّصِيبَةٌ ۚ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ ثُمَّ جَاءُوكَ يَحْلِفُونَ بِاللَّهِ إِن ۚ أَرَدْنَا
إِلَّا ۚ إِحْسَنًا ۚ وَتَوْفِيقًا ۚ

कि जब उनपर उनके करतूत की वजह से कोई मुसीबत पड़ती है तो क्योंकर तुम्हारे पास खुदा की क़समें खाते हैं कि हमारा मतलब नेकी और मेल मिलाप के सिवा कुछ न था ये वह लोग हैं कि कुछ खुदा ही उनके दिल की हालत खूब जानता है

أَوَلَيْكَ الَّذِينَ يَعْلَمُ اللَّهُ مَا فِي قُلُوبِهِمْ فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ وَعِظْهُمْ وَقُلْ لَهُمْ فِي أَنْفُسِهِمْ
قَوْلًا بَلِيغًا ۝۱

पस तुम उनसे दरगुज़र करो और उनको नसीहत करो और उनसे उनके दिल में असर करने वाली बात कहो और हमने कोई रसूल नहीं भेजा मगर इस वास्ते कि खुदा के हुक्म से लोग उसकी इताअत करें

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ رَسُولٍ إِلَّا لِيُطَاعَ بِإِذْنِ اللَّهِ ۝ وَلَوْ أَنَّهُمْ إِذْ ظَلَمُوا ۝ أَنْفُسَهُمْ
جَاءُوكَ فَاسْتَغْفَرُوا ۝ اللَّهَ وَأَسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُولُ لَوَجَدُوا ۝ اللَّهَ تَوَّابًا ۝۱ رَحِيمًا ۝۱

और (रसूल) जब उन लोगों ने (नाफ़रमानी करके) अपनी जानों पर जुल्म किया था अगर तुम्हारे पास चले आते और खुदा से माफ़ी माँगते और रसूल (तुम) भी उनकी मग़फ़िरत चाहते तो बेशक वह लोग खुदा को बड़ा तौबा कुबूल करने वाला मेहरबान पाते

فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ حَتَّىٰ يُحَكِّمُوكَ فِيمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوا ۝ فِي أَنْفُسِهِمْ
حَرَجًا ۝۱ مِمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوا ۝ تَسْلِيمًا ۝۱

पस (ऐ रसूल) तुम्हारे परवरदिगार की क़सम ये लोग सच्चे मोमिन न होंगे तावक्ते कि अपने बाहमी झगड़ों में तुमको अपना हाकिम (न) बनाएं फिर (यही नहीं बल्कि) जो कुछ तुम फैसला करो उससे किसी तरह दिलतंग भी न हों बल्कि खुशी खुशी उसको मान लें

وَلَوْ أَنَّا كَتَبْنَا عَلَيْهِمْ أَنْ اقْتُلُوا ۝ أَنْفُسَكُمْ أَوْ أَخْرِجُوا ۝ مِنْ دِيَارِكُمْ مَا فَعَلُوهُ إِلَّا
قَلِيلٌ ۝۱ مِنْهُمْ ۝ وَلَوْ أَنَّهُمْ فَعَلُوا ۝ مَا يُوعَظُونَ بِهِ ۝ لَكَانَ خَيْرًا ۝۱ لَهُمْ وَأَشَدَّ تَثْبِيتًا ۝۱

(इस्लामी शरीयत में तो उनका ये हाल है) और अगर हम बनी इसराइल की तरह उनपर ये हुक्म जारी कर देते कि तुम अपने आपको क़त्ल कर डालो या शहर बदर हो जाओ तो उनमें से चन्द आदमियों के सिवा ये लोग तो उसको न करते और अगर ये लोग इस बात पर अमल करते जिसकी उन्हें नसीहत की जाती है तो उनके हक़ में बहुत बेहतर होता

وَإِذَا ۝۱ لَّآءَاتَيْنَهُمْ مِنْ لَدُنَّا أَجْرًا عَظِيمًا ۝۱

और (दीन में भी) बहुत साबित क़दमी से जमे रहते और इस सूरत में हम भी अपनी तरफ़ से ज़रूर बड़ा अच्छा बदला देते

وَلَهَدَيْنَهُمْ صِرَاطًا ۖ مُسْتَقِيمًا ۚ

और उनको राहे रास्त की भी ज़रूर हिदायत करते

وَمَنْ يُطِعِ اللَّهَ وَالرَّسُولَ فَأُوْلَٰئِكَ مَعَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مِنَ النَّبِيِّينَ
وَالصِّدِّيقِينَ وَالشُّهَدَاءِ وَالصَّالِحِينَ ۖ وَحَسُنَ أُوْلَٰئِكَ رَفِيقًا ۚ

और जिस शख्स ने खुदा और रसूल की इताअत की तो ऐसे लोग उन (मक़बूल) बन्दों के साथ होंगे जिन्हें खुदा ने अपनी नेअमते दी हैं यानि अम्बिया और सिद्दीकीन और शोहदा और सालेहीन और ये लोग क्या ही अच्छे रफ़ीक़ हैं

ذَٰلِكَ الْفَضْلُ مِنَ اللَّهِ ۖ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ عِلِيمًا ۚ

ये खुदा का फ़ज़ल (व करम) है और खुदा तो वाकिफ़कारी में बस है

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۖ خُذُوا ۚ حِذْرَكُمْ فَانْفِرُوا ۚ ثَبَاتٍ ۖ أَوْ أَنفِرُوا ۚ جَمِيعًا ۚ

ऐ ईमानवालों (जिहाद के वक्त) अपनी हिफ़ाज़त के (ज़राए) अच्छी तरह देखभाल लो फिर तुम्हें इस्तेयार है ख्वाह दस्ता दस्ता निकलो या सबके सब इकट्ठे होकर निकल खड़े हो

وَإِنْ مِنْكُمْ لَمَنْ لَّيَبْطِئَنَّ فَإِنْ أَصَابَتْكُمْ مُّصِيبَةٌ ۖ قَالُوا قَدْ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْنَا ۖ وَإِنْ لَمْ أَكُنْ
مَعَهُمْ شَهِيدًا ۚ

और तुममें से बाज़ ऐसे भी हैं जो (जेहाद से) ज़रूर पीछे रहेंगे फिर अगर इत्तेफ़ाक़न तुमपर कोई मुसीबत आ पड़ी तो कहने लगे खुदा ने हमपर बड़ा फ़ज़ल किया कि उनमें (मुसलमानों) के साथ मौजूद न हुआ

وَلَئِنْ أَصَابَكُمْ فَضْلٌ ۖ مِّنَ اللَّهِ لَيَقُولَنَّ كَأَن لَّمْ تَكُنْ ۖ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُ ۖ مَوَدَّةٌ ۖ يَلَيِّنُنِي
كُنْتُ مَعَهُمْ فَأَفُوزَ فَوْزًا عَظِيمًا ۚ

और अगर तुमपर खुदा ने फ़ज़ल किया (और दुश्मन पर ग़ालिब आए) तो इस तरह अजनबी बनके कि गोया तुममें उसमें कभी मोहब्बत ही न थी यूँ कहने लगा कि ऐ काश उनके साथ होता तो मैं भी बड़ी कामयाबी हासिल करता

﴿ ۱ ﴾ فَلْيُقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ الَّذِينَ يَشْرُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا بِالْآخِرَةِ ﴿ ۲ ﴾ وَمَنْ يُقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَيُقَاتِلْ أَوْ يَغْلِبْ فَسَوْفَ نُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ﴿ ۳ ﴾

पस जो लोग दुनिया की ज़िन्दगी (जान तक) आखेरत के वास्ते दे डालने को मौजूद हैं उनको खुदा की राह में जेहाद करना चाहिए और जिसने खुदा की राह में जेहाद किया फिर शहीद हुआ तो गोया ग़ालिब आया तो (बहरहाल) हम तो अनक़रीब ही उसको बड़ा अज़्र अता फ़रमायेंगे

وَمَا لَكُمْ لَا تُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ وَالْوِلْدَانِ الَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا أَخْرِجْنَا مِنْ هَذِهِ الْقَرْيَةِ الظَّالِمِ أَهْلُهَا وَاجْعَلْ لَنَا مِنْ لَدُنْكَ وَلِيًّا ﴿ ۱ ﴾ وَاجْعَلْ لَنَا مِنْ لَدُنْكَ نَصِيرًا

(और मुसलमानों) तुमको क्या हो गया है कि खुदा की राह में उन कमज़ोर और बेबस मर्दों और औरतों और बच्चों (को कुफ़्फ़ार के पंजे से छुड़ाने) के वास्ते जेहाद नहीं करते जो (हालते मजबूरी में) खुदा से दुआएं माँग रहे हैं कि ऐ हमारे पालने वाले किसी तरह इस बस्ती (मक्का) से जिसके बाशिन्दे बड़े ज़ालिम हैं हमें निकाल और अपनी तरफ़ से किसी को हमारा सरपरस्त बना और तू खुद ही किसी को अपनी तरफ़ से हमारा मददगार बना

الَّذِينَ ءَامَنُوا ﴿ ۱ ﴾ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ﴿ ۲ ﴾ وَالَّذِينَ كَفَرُوا ﴿ ۳ ﴾ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ الطَّاغُوتِ فَقَاتِلُوا ﴿ ۴ ﴾ أَوْلِيَاءَ الشَّيْطَانِ ﴿ ۵ ﴾ إِنَّ كَيْدَ الشَّيْطَانِ كَانَ ضَعِيفًا

(पस देखो) ईमानवाले तो खुदा की राह में लड़ते हैं और कुफ़्फ़ार शैतान की राह में लड़ते मरते हैं पस (मुसलमानों) तुम शैतान के हवा खाहों से लड़ो और (कुछ परवाह न करो) क्योंकि शैतान का दाओ तो बहुत ही बोदा है

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ قِيلَ لَهُمْ كُفُّوا أَيْدِيَكُمْ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ إِذَا فَرِيقٌ مِّنْهُمْ يَخْشَوْنَ النَّاسَ كَخَشْيَةِ اللَّهِ أَوْ أَشَدَّ خَشْيَةً ۚ وَقَالُوا رَبَّنَا لِمَ كُتِبَتْ عَلَيْنَا الْقِتَالُ لَوْلَا أَخَّرْتَنَا إِلَىٰ أَجَلٍ قَرِيبٍ ۗ قُلْ مَتَّعْتُ الدُّنْيَا قَلِيلٌ ۚ وَالْآخِرَةُ خَيْرٌ لِّمَنِ اتَّقَىٰ وَلَا تُظْلَمُونَ فَتِيلًا

(ऐ रसूल) क्या तुमने उन लोगों (के हाल) पर नज़र नहीं की जिनको (जेहाद की आरजू थी) और उनको हुक्म दिया गया था कि (अभी) अपने हाथ रोके रहो और पाबन्दी से नमाज़ पढ़ो और ज़कात दिए जाओ मगर जब जिहाद (उनपर वाजिब किया गया तो) उनमें से कुछ लोग (बोदेपन में) लोगों से इस तरह डरने लगे जैसे कोई खुदा से डरे बल्कि उससे कहीं ज्यादा और (घबराकर) कहने लगे खुदाया तूने हमपर जेहाद क्यों वाजिब कर दिया हमको कुछ दिनों की और मोहलत क्यों न दी (ऐ रसूल) उनसे कह दो कि दुनिया की आसाइश बहुत थोड़ा सा है और जो (खुदा से) डरता है उसकी आखिरत उससे कहीं बेहतर है

أَيِنَّمَا تَكُونُوا يُدْرِكَكُمُ الْمَوْتُ وَلَوْ كُنْتُمْ فِي بُرُوجٍ ۚ مُّشِيدَةً ۚ وَإِن تَصِبْهُمْ حَسَنَةً ۚ يَقُولُوا هَذِهِ مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ ۚ وَإِن تَصِبْهُمْ سَيِّئَةً ۚ يَقُولُوا هَذِهِ مِّنْ عِنْدِكَ ۚ قُلْ كُلُّ مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ ۚ فَمَالِ هَؤُلَاءِ الْقَوْمِ لَا يَكَادُونَ يَفْقَهُونَ حَدِيثًا ۚ

और वहां रेशा (बाल) बराबर भी तुम लोगों पर जुल्म नहीं किया जाएगा तुम चाहे जहाँ हो मौत तो तुमको ले डालेगी अगरचे तुम कैसे ही मज़बूत पक्के गुम्बदों में जा छुपो और उनको अगर कोई भलाई पहुंचती है तो कहने लगते हैं कि ये खुदा की तरफ़ से है और अगर उनको कोई तकलीफ़ पहुंचती है तो (शरारत से) कहने लगते हैं कि (ऐ रसूल) ये तुम्हारी बदौलत है (ऐ रसूल) तुम कह दो कि सब खुदा की तरफ़ से है पस उन लोगों को क्या हो गया है कि कोई बात ही नहीं समझते

مَا أَصَابَكَ مِنْ حَسَنَةٍ ۚ فَمِنَ اللَّهِ ۚ وَمَا أَصَابَكَ مِنْ سَيِّئَةٍ ۚ فَمِنْ نَفْسِكَ ۚ وَأَرْسَلْنَا لِلنَّاسِ رَسُولًا ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا ۚ

हालाँकि (सच तो यूँ है कि) जब तुमको कोई फ़ायदा पहुंचे तो (समझो कि) खुदा की तरफ़ से है और जब तुमको कोई फ़ायदा पहुंचे तो (समझो कि) खुद तुम्हारी बदौलत है और (ऐ रसूल) हमने तुमको लोगों के पास पैग़म्बर बनाकर भेजा है और (इसके लिए) खुदा की गवाही काफ़ी है

مَنْ يُطِيعِ الرَّسُولَ فَقَدْ أَطَاعَ اللَّهَ ۚ وَمَنْ تَوَلَّىٰ فَمَا أَرْسَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ حَفِيظًا ۚ۝۱

जिसने रसूल की इताअत की तो उसने खुदा की इताअत की और जिसने रूगरदानी की तो तुम कुछ ख्याल न करो (क्योंकि) हमने तुम को पासबान (मुकरर) करके तो भेजा नहीं है

وَيَقُولُونَ طَاعَةٌ ۚ فَإِذَا بَرَزُوا مِنْ عِنْدِكَ بَيَّتَ طَائِفَةٌ ۚ مِنْهُمْ غَيْرَ الَّذِي تَقُولُ ۚ وَاللَّهُ يَكْتُبُ مَا يُبَيِّتُونَ ۚ فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ وَكِيلًا

(ये लोग तुम्हारे सामने) तो कह देते हैं कि हम (आपके) फ़रमाबरदार हैं लेकिन जब तुम्हारे पास से बाहर निकले तो उनमें से कुछ लोग जो कुछ तुमसे कह चुके थे उसके खिलाफ़ रातों को मशवरा करते हैं हालाँकि (ये नहीं समझते) ये लोग रातों को जो कुछ भी मशवरा करते हैं उसे खुदा लिखता जाता है पास तुम उन लोगों की कुछ परवाह न करो और खुदा पर भरोसा रखो और खुदा कारसाज़ी के लिए काफ़ी है

أَفَلَا يَتَذَكَّرُونَ ۚ الْقُرْآنَ ۚ وَلَوْ كَانَ مِنْ عِنْدِ غَيْرِ اللَّهِ لَوَجَدُوا فِيهِ اخْتِلَافًا ۚ كَثِيرًا ۚ۝۲

तो क्या ये लोग कुरान में भी ग़ौर नहीं करते और (ये नहीं ख्याल करते कि) अगर खुदा के सिवा किसी और की तरफ़ से (आया) होता तो ज़रूर उसमें बड़ा इख्तेलाफ़ पाते

وَإِذَا جَاءَهُمْ أَمْرٌ ۚ مِّنَ الْأَمْنِ أَوْ الْخَوْفِ أَذَاعُوا ۚ بِهِ ۚ وَلَوْ رَدُّوهُ إِلَى الرَّسُولِ وَإِلَىٰ أُولِي الْأَمْرِ مِنْهُمْ لَعَلِمَهُ الَّذِينَ يَسْتَنَدُونَ ۚ بِطُونُهُ ۚ مِنْهُمْ ۚ وَلَوْ لَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ ۚ لَاتَّبَعْتُمُ الشَّيْطَانَ إِلَّا قَلِيلًا ۚ۝۳

और जब उनके (मुसलमानों के) पास अमन या खौफ़ की खबर आयी तो उसे फ़ौरन मशहूर कर देते हैं हालाँकि अगर वह उसकी खबर को रसूल (या) और ईमानदारों में से जो साहबाने हुकूमत तक पहुंचाते तो बेशक जो लोग उनमें से उसकी तहक़ीक़ करने वाले हैं (पैग़म्बर या वली) उसको समझ लेते कि (मशहूर करने की ज़रूरत है या नहीं) और (मुसलमानों) अगर तुमपर खुदा का फ़ज़ल (व करम) और उसकी मेहरबानी न होती तो चन्द आदमियों के सिवा तुम सबके सब शैतान की पैरवी करने लगते

فَقُتِلَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ لَا تَكْلَفُ إِلَّا نَفْسَكَ ۚ وَحَرَّضِ الْمُؤْمِنِينَ ۚ عَسَى اللَّهُ أَنْ يَكُفَّ بَأْسَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ وَاللَّهُ أَشَدُّ بَأْسًا ۖ وَأَشَدُّ تَنكِيلًا ۖ

पस (ऐ रसूल) तुम खुदा की राह में जिहाद करो और तुम अपनी ज़ात के सिवा किसी और के ज़िम्मेदार नहीं हो और ईमानदारों को (जेहाद की) तरगीब दो और अनक्ररीब खुदा काफ़िरों की हैबत रोक देगा और खुदा की हैबत सबसे ज्यादा है और उसकी सज़ा बहुत सख्त है

مَنْ يَشْفَعْ شَفْعَةً حَسَنَةً ۚ يَكُنْ لَهُ ۚ نَصِيبٌ ۚ مِنْهَا ۚ وَمَنْ يَشْفَعْ شَفْعَةً ۚ سَيِّئَةً ۚ يَكُنْ لَهُ ۚ كِفْلٌ ۚ مِنْهَا ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ مُّقِيتًا ۖ

जो शख्स अच्छे काम की सिफ़ारिश करे तो उसको भी उस काम के सवाब से कुछ हिस्सा मिलेगा और जो बुरे काम की सिफ़ारिश करे तो उसको भी उसी काम की सज़ा का कुछ हिस्सा मिलेगा और खुदा तो हर चीज़ पर निगेहबान है

وَإِذَا حُيِّتُمْ بِتَحِيَّةٍ ۚ فَحَيُّوا ۚ بِأَحْسَنَ مِنْهَا أَوْ رُدُّوهَا ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ حَسِيبًا

और जब कोई शख्स सलाम करे तो तुम भी उसके जवाब में उससे बेहतर तरीके से सलाम करो या वही लफज़ जवाब में कह दो बेशक खुदा हर चीज़ का हिसाब करने वाला है

اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ لِيَجْمَعََنَّكُمْ إِلَى يَوْمِ الْقِيَمَةِ لَا رَيْبَ فِيهِ ۚ وَمَنْ أَصْدَقُ مِنَ اللَّهِ حَدِيثًا ۖ

अल्लाह तो वही परवरदिगार है जिसके सिवा कोई क़ाबिले परस्तिश नहीं वह तुमको क़यामत के दिन जिसमें ज़रा भी शक नहीं ज़रूर इकट्ठा करेगा और खुदा से बढ़कर बात में सच्चा कौन होगा

﴿ فَمَا لَكُمْ فِي الْمُنَافِقِينَ فِتْنَةٍ وَاللَّهُ أَرْكَسَهُمْ بِمَا كَسَبُوا ﴾ ﴿ أَتُرِيدُونَ أَنْ تَهْدُوا ﴾
 مَنْ أَضَلَّ اللَّهُ ﴿ وَمَنْ يُضِلِّ اللَّهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهُ ﴾ سَبِيلًا ﴿

(मुसलमानों) फिर तुमको क्या हो गया है कि तुम मुनाफ़िकों के बारे में दो फ़रीक़ हो गए हो (एक मुवाफ़िक़ एक मुखालिफ़) हालाँकि खुद खुदा ने उनके करतूतों की बदौलत उनकी अक्लों को उलट पुलट दिया है क्या तुम ये चाहते हो कि जिसको खुदा ने गुमराही में छोड़ दिया है तुम उसे राहे रास्त पर ले आओ हालाँकि खुदा ने जिसको गुमराही में छोड़ दिया है उसके लिए तुममें से कोई शख्स रास्ता निकाल ही नहीं सकता

﴿ وَدُّوا ﴾ ﴿ لَوْ تَكْفُرُونَ كَمَا كَفَرُوا ﴾ ﴿ فَتَكُونُونَ سَوَاءً ﴾ ﴿ فَلَا تَتَّخِذُوا ﴾ ﴿ مِنْهُمْ أَوْلِيَاءَ ﴾
 حَتَّى يُهَاجِرُوا ﴿ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ﴾ ﴿ فَإِنْ تَوَلَّوْا ﴾ ﴿ فَخُذُوهُمْ وَأَقْتُلُوهُمْ حَيْثُ ﴾
 وَجَدْتُمُوهُمْ ﴿ وَلَا تَتَّخِذُوا ﴾ ﴿ مِنْهُمْ وَلِيًّا ﴿ وَلَا نَصِيرًا ﴾

उन लोगों की ख्वाहिश तो ये है कि जिस तरह वह काफ़िर हो गए तुम भी काफ़िर हो जाओ ताकि तुम उनके बराबर हो जाओ पस जब तक वह खुदा की राह में हिजरत न करें तो उनमें से किसी को दोस्त न बनाओ फिर अगर वह उससे भी मुंह मोड़ें तो उन्हें गिरफ्तार करो और जहाँ पाओ उनको क़त्ल करो और उनमें से किसी को न अपना दोस्त बनाओ न मददगार

﴿ إِلَّا الَّذِينَ يَصِلُونَ إِلَى قَوْمٍ ﴾ ﴿ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِيثَاقٌ أَوْ جَاءُوكُمْ حَصِرَتْ صُدُورُهُمْ ﴾
 ﴿ أَنْ يَقْتُلُوكُمْ أَوْ يُقَاتِلُوا ﴾ ﴿ قَوْمَهُمْ ﴾ ﴿ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَسَلَّطَهُمْ عَلَيْكُمْ فَلَقَاتَلُوكُمْ ﴾ ﴿ فَإِنْ ﴾
 أَعْتَزَلُوكُمْ فَلَمْ يُقَاتِلُوكُمْ وَالْقَوَا ﴿ إِلَيْكُمْ أَلْسَلَمَ فَمَا جَعَلَ اللَّهُ لَكُمْ عَلَيْهِمْ سَبِيلًا ﴿

मगर जो लोग किसी ऐसी क़ौम से जा मिलें कि तुममें और उनमें (सुलह का) एहद व पैमान हो चुका है या तुमसे जंग करने या अपनी क़ौम के साथ लड़ने से दिलतंग होकर तुम्हारे पास आए हों (तो उन्हें आजार न पहुंचाओ) और अगर खुदा चाहता तो उनको तुमपर ग़लबा देता तो वह तुमसे ज़रूर लड़ पड़ते पस अगर वह तुमसे किनारा क़शी करे और तुमसे न लड़े और तुम्हारे पास सुलाह का पैग़ाम दे तो तुम्हारे लिए उन लोगों पर आजार पहुंचाने की खुदा ने कोई सबील नहीं निकाली

سَتَجِدُونَ ءَاخِرِينَ يُرِيدُونَ أَنْ يَأْمَنُوكُمْ وَيَأْمَنُوا ۚ قَوْمَهُمْ كُلٌّ مَا رُدُّوٓا۟ ۚ إِلَى الْفِتْنَةِ أُرْكِسُوا ۚ فِيهَا ۚ فَإِنْ لَّمْ يَعْتَزِلُوكُمْ وَيُلْقُوا ۚ إِلَيْكُمْ السَّلَامَ وَيَكُفُّوٓا۟ ۚ أَيْدِيَهُمْ فَاذْهَبُوا ۚ وَاقْتُلُوهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوهُمْ ۚ وَأُو۟لَٓئِكَ جَعَلْنَا لَكُمْ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنًا ۚ ا۟ مُبِينًا ۚ ا

अनकरीब तुम कुछ ऐसे और लोगों को भी पाओगे जो चाहते हैं कि तुमसे भी अमन में रहें और अपनी कौम से भी अमन में रहें (मगर) जब कभी झगड़े की तरफ बुलाए गए तो उसमें औंधे मुंह के बल गिर पड़े पस अगर वह तुमसे न किनारा कशी करें और न तुम्हें सुलह का पैगाम दें और न लड़ाई से अपने हाथ रोकें पस उनको पकड़ों और जहाँ पाओ उनको क़त्ल करो और यही वह लोग हैं जिनपर हमने तुम्हें सरीही ग़लबा अता फ़रमाया

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ أَنْ يَقْتُلَ مُؤْمِنًا إِلَّا خَطَاً ۚ ا۟ وَمَنْ قَتَلَ مُؤْمِنًا خَطَاً ۚ ا۟ فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ ۚ ا۟ مُؤْمِنَةٍ ۚ ا۟ وَدِيَّةٌ ۚ ا۟ مُسْلَمَةٌ إِلَىٰ أَهْلِهِ ۚ ا۟ إِلَّا أَنْ يَصَّدَّقُوا ۚ ا۟ فَإِنْ كَانَ مِنْ قَوْمٍ عَدُوٍّ ۚ ا۟ لَكُمْ وَهُوَ مُؤْمِنٌ ۚ ا۟ فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ ۚ ا۟ مُؤْمِنَةٍ ۚ ا۟ وَإِنْ كَانَ مِنْ قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِيثَاقٌ ۚ ا۟ فَدِيَةٌ ۚ ا۟ مُسْلَمَةٌ إِلَىٰ أَهْلِهِ ۚ ا۟ وَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ ۚ ا۟ مُؤْمِنَةٍ ۚ ا۟ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ تَوْبَةً ۚ ا۟ مِّنَ اللَّهِ ۚ ا۟ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ۚ ا

और किसी ईमानदार को ये जायज़ नहीं कि किसी मोमिन को जान से मार डाले मगर धोखे से (क़त्ल किया हो तो दूसरी बात है) और जो शख्स किसी मोमिन को धोखे से (भी) मार डाले तो (उसपर) एक ईमानदार गुलाम का आज़ाद करना और मक़तूल के क़राबतदारों को खून बहा देना (लाज़िम) है मगर जब वह लोग माफ़ करें फिर अगर मक़तूल उन लोगों में से हो वह जो तुम्हारे दुश्मन (काफ़िर हरबी) हैं और खुद कातिल मोमिन है तो (सिर्फ) एक मुसलमान गुलाम का आज़ाद करना और अगर मक़तूल उन (काफ़िर) लोगों में का हो जिनसे तुम से एहद व पैमान हो चुका है तो (कातिल पर) वारिसे मक़तूल को खून बहा देना और एक बन्दए मोमिन का आज़ाद करना (वाज़िब) है फिर जो शख्स (गुलाम आज़ाद करने को) न पाये तो उसका कुफ़ारा खुदा की तरफ़ से लगातार दो महीने के रोज़े हैं और खुदा खूब वाकिफ़कार (और) हिकमत वाला है

وَمَنْ يَقْتُلْ مُؤْمِنًا مُّتَعَمِّدًا ۚ ا۟ فَجَزَاؤُهُ ۚ ا۟ جَهَنَّمُ خُلِدًا ۚ ا۟ فِيهَا وَغَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَلَعَنَهُ ۚ ا۟ وَأَعَدَّ لَهُ ۚ ا۟ عَذَابًا عَظِيمًا ۚ ا

और जो शख्स किसी मोमिन को जानबूझ के मार डाले (गुलाम की आज़ादी वगैरह उसका कुफ़ारा नहीं बल्कि) उसकी सज़ा दोज़क है और वह उसमें हमेशा रहेगा उसपर खुदा ने (अपना) ग़ज़ब ढाया है और उसपर लानत की है और उसके लिए बड़ा सख्त अज़ाब तैयार कर रखा है

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ إِذَا ضَرَبْتُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَتَبَيَّنُوا ۚ وَلَا تَقُولُوا ۙ لِمَنْ أَلْقَىٰ
إِلَيْكُمُ السَّلَامَ لَسْتَ مُؤْمِنًا ۖ تَبْتَغُونَ عَرَضَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا فَعِنْدَ اللَّهِ مَغَانِمُ
كَثِيرَةٌ ۚ ۙ كَذَلِكَ كُنْتُمْ مِنْ قَبْلُ فَمَنَّ اللَّهُ عَلَيْكُمْ فَتَبَيَّنُوا ۚ ۙ إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِمَا
تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ۚ

ऐ ईमानदारों जब तुम खुदा की राह में (जेहाद करने को) सफ़र करो तो (किसी के क़त्ल करने में जल्दी न करो बल्कि) अच्छी तरह जाँच कर लिया करो और जो शख्स (इज़हारे इस्लाम की गरज़ से) तुम्हे सलाम करे तो तुम बे सोचे समझे न कह दिया करो कि तू ईमानदार नहीं है (इससे ज़ाहिर होता है) कि तुम (फ़क्त) दुनियावी आसाइश की तमन्ना रखते हो मगर इसी बहाने क़त्ल करके लूट लो और ये नहीं समझते कि (अगर यही है) तो खुदा के यहाँ बहुत से ग़नीमतें हैं (मुसलमानों) पहले तुम खुद भी तो ऐसे ही थे फिर खुदा ने तुमपर एहसान किया (कि बेखटके मुसलमान हो गए) गरज़ खूब छानबीन कर लिया करो बेशक खुदा तुम्हारे हर काम से ख़बरदार है

لَا يَسْتَوِي الْقَاعِدُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ غَيْرُ أُولَ ۙ الضَّرَرِ وَالْمُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ
بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ ۚ فَضَّلَ اللَّهُ الْمُجَاهِدِينَ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ عَلَى الْقَاعِدِينَ
دَرَجَةً ۚ ۙ وَكُلًّا ۖ وَعَدَ اللَّهُ الْحُسْنَى ۚ وَفَضَّلَ اللَّهُ الْمُجَاهِدِينَ عَلَى الْقَاعِدِينَ أَجْرًا
عَظِيمًا ۚ

माज़ूर लोगों के सिवा जेहाद से मुंह छिपा के घर में बैठने वाले और खुदा की राह में अपने जान व माल से जिहाद करने वाले हरगिज़ बराबर नहीं हो सकते (बल्कि) अपने जान व माल से जिहाद करने वालों को घर बैठे रहने वालों पर खुदा ने दरजे के एतबार से बड़ी फ़ज़ीलत दी है (अगरचे) खुदा ने सब ईमानदारों से (स्वाह जिहाद करें या न करें) भलाई का वायदा कर लिया है मगर गाज़ियों को खाना नशीनों पर अज़ीम सवाब के एतबार से खुदा ने बड़ी फ़ज़ीलत दी है

دَرَجَتٍ ۚ ۙ مِنْهُ وَمَغْفِرَةً ۚ وَرَحْمَةً ۚ ۙ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا ۚ ۙ رَحِيمًا

(यानी उन्हें) अपनी तरफ़ से बड़े बड़े दरजे और बख़्शिश और रहमत (अता फ़रमाएगा) और खुदा तो बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है

إِنَّ الَّذِينَ تَوَفَّاهُمُ الْمَلَائِكَةُ ظَالِمِي أَنْفُسِهِمْ قَالُوا ۖ فِيمَ كُنْتُمْ ۖ قَالُوا ۖ كُنَّا مُسْتَضْعَفِينَ فِي الْأَرْضِ ۖ قَالُوا ۖ أَلَمْ تَكُنْ أَرْضُ اللَّهِ وَسِعَةً ۖ فَتُهَاجِرُوا ۖ فِيهَا ۖ فَأُولَٰئِكَ مَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ ۖ وَسَاءَتْ مَصِيرًا

बेशक जिन लोगों की कब्जे रूह फ़रिश्ते ने उस वक़्त की है कि (दारूल हरब में पड़े) अपनी जानों पर जुल्म कर रहे थे और फ़रिश्ते कब्जे रूह के बाद हैरत से कहते हैं तुम किस (हालत) ग़फ़लत में थे तो वह (माज़ेरत के लहजे में) कहते हैं कि हम तो रूए ज़मीन में बेकस थे तो फ़रिश्ते कहते हैं कि खुदा की (ऐसी लम्बी चौड़ी) ज़मीन में इतनी सी गुन्जाइश न थी कि तुम (कहीं) हिज़रत करके चले जाते पस ऐसे लोगों का ठिकाना जहन्नुम है और वह बुरा ठिकाना है

إِلَّا الْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ وَالْوِلْدَنِ لَا يَسْتَطِيعُونَ حِيلَةً ۖ وَلَا يَهْتَدُونَ سَبِيلًا ۖ

मगर जो मर्द और औरतें और बच्चे इस क़दर बेबस हैं कि न तो (दारूल हरब से निकलने की) कोई तदबीर कर सकते हैं और उनकी रिहाई की कोई राह दिखाई देती है

فَأُولَٰئِكَ عَسَى اللَّهُ أَنْ يَعْفُوَ عَنْهُمْ ۖ وَكَانَ اللَّهُ عَفُورًا غَفُورًا ۖ

तो उम्मीद है कि खुदा ऐसे लोगों से दरगुज़रे और खुदा तो बड़ा माफ़ करने वाला और बख़्शने वाला है

ۖ وَمَنْ يُهَاجِرْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ يَجِدْ فِي الْأَرْضِ مُرْغَمًا ۖ كَثِيرًا ۖ وَسِعَةً ۖ وَمَنْ يَخْرُجْ مِنْ ۖ بَيْتِهِ ۖ مُهَاجِرًا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ ۖ ثُمَّ يُدْرِكْهُ الْمَوْتُ فَقَدْ وَقَعَ أَجْرُهُ ۖ عَلَى اللَّهِ ۖ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا ۖ رَحِيمًا ۖ

और जो शख्स खुदा की राह में हिज़रत करेगा तो वह रूए ज़मीन में बा फ़रागत (चैन से रहने सहने के) बहुत से कुशादा मक़ाम पाएगा और जो शख्स अपने घर से ज़िलावतन होके खुदा और उसके रसूल की तरफ़ निकल खड़ा हुआ फिर उसे (मंज़िले मक़सूद) तक पहुंचने से पहले मौत आ जाए तो खुदा पर उसका सवाब लाज़िम हो गया और खुदा तो बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है ही

وَإِذَا ضَرَبْتُمْ فِي الْأَرْضِ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَقْصُرُوا ۚ مِنَ الصَّلَاةِ إِنْ خِفْتُمْ أَنْ يَفْتِنَكُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ إِنَّ الْكَافِرِينَ كَانُوا ۚ لَكُمْ عَدُوٌّ ۚ مُبِينٌ ۚ

(मुसलमानों जब तुम रूए ज़मीन पर सफ़र करो) और तुमको इस अम्र का खौफ़ हो कि कुफ़ार (असनाए नमाज़ में) तुमसे फ़साद करेंगे तो उसमें तुम्हारे वास्ते कुछ मुज़ाएफ़ा नहीं कि नमाज़ में कुछ कम कर दिया करो बेशक कुफ़ार तो तुम्हारे खुल्लम खुल्ला दुश्मन हैं

وَإِذَا كُنْتَ فِيهِمْ فَأَقَمْتَ لَهُمُ الصَّلَاةَ فَلْتَقُمْ طَائِفَةٌ ۚ مِنْهُمْ مَعَكَ وَلْيَأْخُذُوا ۚ أَسْلِحَتَهُمْ فَإِذَا سَجَدُوا ۚ فَلْيَكُونُوا ۚ مِنْ وَرَائِكُمْ وَلَتَأْتِ طَائِفَةٌ أُخْرَىٰ لَمْ يُصَلُّوا ۚ فَلْيُصَلُّوا ۚ مَعَكَ وَلْيَأْخُذُوا ۚ حِذْرَهُمْ وَأَسْلِحَتَهُمْ ۚ وَدَّ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ لَوْ تَغْفُلُونَ عَنْ أَسْلِحَتِكُمْ وَأَمْتِعَتِكُمْ فَيَمِيلُونَ عَلَيْكُمْ مَيْلَةً ۚ وَحِدةً ۚ ۚ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِنْ كَانَ بِكُمْ أَذًى ۚ مِنْ مَطَرٍ أَوْ كُنْتُمْ مَرْضَىٰ أَنْ تَضَعُوا ۚ أَسْلِحَتَكُمْ ۚ وَخُذُوا ۚ حِذْرَكُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ أَعَدَّ لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا ۚ مُهِينًا ۚ

और (ऐ रसूल) तुम मुसलमानों में मौजूद हो और (लड़ाई हो रही हो) कि तुम उनको नमाज़ पढ़ाने लगो तो (दो गिरोह करके) एक को लड़ाई के वास्ते छोड़ दो (और) उनमें से एक जमाअत तुम्हारे साथ नमाज़ पढ़े और अपने हथियार अपने साथ लिए रहे फिर जब (पहली रकअत के) सजदे कर (दूसरी रकअत फुरादा पढ़) ले तो तुम्हारे पीछे पुश्त पनाह बनें और दूसरी जमाअत जो (लड़ रही थी और) जब तक नमाज़ नहीं पढ़ने पायी है और (तुम्हारी दूसरी रकअत में) तुम्हारे साथ नमाज़ पढ़े और अपनी हिफ़ाज़त की चीज़े और अपने हथियार (नमाज़ में साथ) लिए रहे कुफ़ार तो ये चाहते ही हैं कि काश अपने हथियारों और अपने साज़ व सामान से ज़रा भी ग़फलत करो तो एक बारगी सबके सब तुम पर टूट पड़ें हों अलबत्ता उसमें कुछ मुज़ाएफ़ा नहीं कि (इत्तेफ़ाक़न) तुमको बारिश के सबब से कुछ तकलीफ़ पहुंचे या तुम बीमार हो तो अपने हथियार (नमाज़ में) उतार के रख दो और अपनी हिफ़ाज़त करते रहो और खुदा ने तो काफ़िरों के लिए ज़िल्लत का अज़ाब तैयार कर रखा है

فَإِذَا قَضَيْتُمُ الصَّلَاةَ فَاذْكُرُوا ۚ اللَّهَ قِيَمًا ۚ وَقُعودًا ۚ ۚ وَعَلَىٰ جُنُوبِكُمْ ۚ فَإِذَا اطْمَأْنَنْتُمْ فَأَقِيمُوا ۚ الصَّلَاةَ ۚ إِنَّ الصَّلَاةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ كِتَابًا ۚ مَوْقُوتًا ۚ

फिर जब तुम नमाज़ अदा कर चुको तो उठते बैठते लेटते (गरज हर हाल में) खुदा को याद करो फिर जब तुम (दुश्मनों से) मुतमईन हो जाओ तो (अपने मअमूल) के मुताबिक़ नमाज़ पढ़ा करो क्योंकि नमाज़ तो ईमानदारों पर वक्त मुतय्यन करके फ़र्ज़ की गयी है

وَلَا تَهْنُوا ۚ فِى اَبْتِغَاءِ الْقَوْمِ ۚ اِنْ تَكُونُوا ۚ تَأْلُمُونَ فَاِنَّهُمْ يَأْلُمُونَ كَمَا تَأْلُمُونَ ۚ وَتَرْجُونَ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا يَرْجُونَ ۚ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا

और (मुसलमानों) दुश्मनों के पीछा करने में सुस्ती न करो अगर लड़ाई में तुमको तकलीफ़ पहुंचती है तो जैसी तुमको तकलीफ़ पहुंचती है उनको भी वैसी ही अज़ीयत होती है और (तुमको) ये भी (उम्मीद है कि) तुम खुदा से वह वह उम्मीदें रखते हो जो (उनको) नसीब नहीं और खुदा तो सबसे वाक्किफ़ (और) हिकमत वाला है

اِنَّا اَنْزَلْنَا اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ لِتَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ بِمَا اَرٰكَ اللّٰهُ ۚ وَلَا تَكُنْ لِلْخٰئِنِيْنَ خَصِيْمًا ۚ

(ऐ रसूल) हमने तुमपर बरहक़ किताब इसलिए नाज़िल की है कि खुदा ने तुम्हारी हिदायत की है उसी तरह लोगों के दरमियान फ़ैसला करो और ख़्यानत करने वालों के तरफ़दार न बनो

وَاسْتَغْفِرِ اللّٰهَ ۚ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا ۚ اِ رَّحِيْمًا ۚ

और (अपनी उम्मत के लिये) खुदा से मग़फ़िरत की दुआ माँगों बेशक़ खुदा बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है

وَلَا تُجَدِلْ عَنِ الَّذِيْنَ يَخْتٰنُوْنَ اَنْفُسَهُمْ ۚ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ مَن كَانَ خَوٰنًا اٰثِيْمًا ۚ

और (ऐ रसूल) तुम (उन बदमाशों) की तरफ़ होकर (लोगों से) न लड़ो जो अपने ही (लोगों) से दगाबाज़ी करते हैं बेशक़ खुदा ऐसे शख्स को दोस्त नहीं रखता जो दगाबाज़ गुनाहगार हो

يَسْتَخْفُوْنَ مِنَ النَّاسِ وَلَا يَسْتَخْفُوْنَ مِنَ اللّٰهِ وَهُوَ مَعَهُمْ اِذْ يُبَيِّتُوْنَ مَا لَا يَرْضٰى مِنَ الْقَوْلِ ۚ وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطًا

लोगों से तो अपनी शरारत छुपाते हैं और (खुदा से नहीं छुपा सकते) हालाँकि वह तो उस वक्त भी उनके साथ साथ है जब वह लोग रातों को (बैठकर) उन बातों के मशवरे करते हैं जिनसे खुदा राज़ी नहीं और खुदा तो उनकी सब करतूतों को (इल्म के अहाते में) घेरे हुए है

هَآأُنْتُمْ هَؤُلَآءِ جَدَلْتُمْ عَنْهُمْ فِى الْحَيَوةِ الدُّنْيَا فَمَنْ يُجِدِ اللَّهَ عَنْهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ أَمْ مَنْ يَكُونُ عَلَيْهِمْ وَكِيلًا؟

(मुसलमानों) खबरदार हो जाओ भला दुनिया की (ज़रा सी) ज़िन्दगी में तो तुम उनकी तरफ़ होकर लड़ने खड़े हो गए (मगर ये तो बताओ) फिर क़यामत के दिन उनका तरफ़दार बनकर खुदा से कौन लड़ेगा या कौन उनका वकील होगा

وَمَنْ يَعْمَلْ سُوءًا أَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهُ؟ ثُمَّ يَسْتَغْفِرِ اللَّهَ يَجِدِ اللَّهَ غَفُورًا؟ رَحِيمًا؟

और जो शख्स कोई बुरा काम करे या (किसी तरह) अपने नफ्स पर ज़ुल्म करे उसके बाद खुदा से अपनी मज़फ़िरत की दुआ माँगे तो खुदा को बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान पाएगा

وَمَنْ يَكْسِبْ إِثْمًا؟ فَإِنَّمَا يَكْسِبُهَا عَلَى نَفْسِهِ؟ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا؟

और जो शख्स कोई गुनाह करता है तो उससे कुछ अपना ही नुक़सान करता है और खुदा तो (हर चीज़ से) वाक़िफ़ (और) बड़ी तदबीर वाला है

وَمَنْ يَكْسِبْ خَطِيئَةً أَوْ إِثْمًا؟ ثُمَّ يَرْمِ بِهِ بَرِيئًا؟ فَقَدْ أَحْتَمَلَ بُهْتَنًا؟ وَإِثْمًا؟ مُبِينًا؟

और जो शख्स कोई ख़ता या गुनाह करे फिर उसे किसी बेक़सूर के सर थोपे तो उसने एक बड़े (इफ़तेरा) और सरीही गुनाह को अपने ऊपर लाद लिया

وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكَ وَرَحْمَتُهُ؟ لَهَمَّتْ طَآئِفَةٌ؟ مِنْهُمْ أَنْ يُضِلُّوكَ وَمَا يُضِلُّونَ إِلَّا أَنْفُسَهُمْ؟ وَمَا يَضُرُّونَكَ مِنْ شَيْءٍ؟ وَأَنْزَلَ اللَّهُ عَلَيْكَ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَكَ مَا لَمْ تَكُنْ تَعْلَمُ؟ وَكَانَ فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكَ عَظِيمًا؟

और (ऐ रसूल) अगर तुमपर खुदा का फ़ज़ल (व करम) और उसकी मेहरबानी न होती तो उन (बदमाशों) में से एक गिरोह तुमको गुमराह करने का ज़रूर क़सद करता हालाँकि वह लोग बस अपने आप को गुमराह कर रहे हैं और यह लोग तुम्हें कुछ भी ज़रर नहीं पहुंचा सकते और खुदा ही ने तो (मेहरबानी की कि) तुमपर अपनी किताब और हिकमत नाज़िल की और जो बातें तुम नहीं जानते थे तुम्हें सिखा दी और तुम पर तो खुदा का बड़ा फ़ज़ल है

۱ لَا خَيْرَ فِي كَثِيرٍ مِّنْ نَّجْوَاهُمْ إِلَّا مَنْ أَمَرَ بِصَدَقَةٍ أَوْ مَعْرُوفٍ أَوْ إِصْلَاحٍ ۚ بَيْنَ
النَّاسِ ۚ وَمَن يَفْعَلْ ذَلِكَ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ فَسَوْفَ نُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ۚ

(ऐ रसूल) उनके राज़ की बातों में अक्सर में भलाई (का तो नाम तक) नहीं मगर (हाँ) जो शख्स किसी को सदका देने या अच्छे काम करे या लोगों के दरमियान मेल मिलाप कराने का हुक्म दे (तो अलबत्ता एक बात है) और जो शख्स (महज़) खुदा की खुशनूदी की खाहिश में ऐसे काम करेगा तो हम अनकरीब ही उसे बड़ा अच्छा बदला अता फरमाएंगे

وَمَن يُشَاقِقِ الرَّسُولَ مِنۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُ الْهُدَىٰ وَيَتَّبِعْ غَيْرَ سَبِيلِ الْمُؤْمِنِينَ
نُؤَلِّهِ مَا تَوَلَّىٰ وَنُصْلِهِ ۚ جَهَنَّمَ ۚ وَسَاءَتْ مَصِيرًا

और जो शख्स राहे रास्त के ज़ाहिर होने के बाद रसूल से सरकशी करे और मोमिनीन के तरीके के सिवा किसी और राह पर चले तो जिधर वह फिर गया है हम भी उधर ही फेर देंगे और (आखिर) उसे जहन्नुम में झोंक देंगे और वह तो बहुत ही बुरा ठिकाना

إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَن يُشْرَكَ بِهِ ۚ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَلِكَ لِمَن يَشَاءُ ۚ وَمَن يُشْرِكْ بِاللَّهِ
فَقَدْ ضَلَّ ضَلَالًا بَعِيدًا

खुदा बेशक उसको तो नहीं बख्शता कि उसका कोई और शरीक बनाया जाए हों उसके सिवा जो गुनाह हो जिसको चाहे बख्श दे और (माज़ अल्लाह) जिसने किसी को खुदा का शरीक बनाया तो वह बस भटक के बहुत दूर जा पड़ा

إِن يَدْعُونَ مِن دُونِهِ ۖ إِلَّا إِنۢثًا ۚ وَإِن يَدْعُونَ إِلَّا شَيْطَانًا ۚ مَّيۡدًا ۚ

मुशरेकीन खुदा को छोड़कर बस औरतों ही की परसतिश करते हैं (यानी बुतों की जो उनके ख्याल में औरतें हैं (दर हक़ीक़त) ये लोग सरकश शैतान की परसतिश करते हैं

لَعَنَهُ اللَّهُ ۚ وَقَالَ لَأَتَّخِذَنَّ مِنْ عِبَادِكَ نَصِيبًا مَّفْرُوضًا ۚ

जिसपर खुदा ने लानत की है और जिसने (इब्तिदा ही में) कहा था कि (खुदावन्दा) मैं तेरे बन्दों में से कुछ खास लोगों को (अपनी तरफ) ज़रूर ले लूंगा

وَالْأُضْلَلْنَهِمْ وَالْأَمْنِيْنَهِمْ وَلِأَمْرِنَهُمْ فَلْيُبَيِّتْكَ عَازَانَ الْأَنْعَمِ وَلِأَمْرِنَهُمْ فَلْيُغَيِّرَنَّ خَلْقَ
 اللَّهِ ۚ وَمَنْ يَتَّخِذِ الشَّيْطَانَ وَلِيًّا ۖ مِّنْ دُونِ اللَّهِ فَقَدْ خَسِرَ خُسْرَانًا ۖ مُّبِينًا ۚ

और फिर उन्हें ज़रूर गुमराह करूंगा और उन्हें बड़ी बड़ी उम्मीदें भी ज़रूर दिलाऊंगा और यकीनन उन्हें सिखा दूंगा फिर वो (बुतों के वास्ते) जानवरों के काम ज़रूर चीर फाड़ करेंगे और अलबत्ता उनसे कह दूंगा बस फिर वो (मेरी तालीम के मुवाफ़िक़) खुदा की बनाई हुई सूरत को ज़रूर बदल डालेंगे और (ये याद रहे कि) जिसने खुदा को छोड़कर शैतान को अपना सरपरस्त बनाया तो उसने खुल्लम खुल्ला सख्त घाटा उठाया

يَعِدُّهُمْ وَيُمْنِيْهِمْ ۚ وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطَانُ إِلَّا غُرُورًا

शैतान उनसे अच्छे अच्छे वायदे भी करता है (और बड़ी बड़ी) उम्मीदें भी दिलाता है और शैतान उनसे जो कुछ वायदे भी करता है वह बस निरा धोखा (ही धोखा) है

أَوَلَيْكَ مَاؤُهُمْ جَهَنَّمُ وَلَا يَجِدُونَ عَنْهَا مَحِيصًا ۚ

यही तो वह लोग हैं जिनका ठिकाना बस जहन्नुम है और वहाँ से भागने की जगह भी न पाएंगे

وَالَّذِينَ ءَامَنُوا ۖ وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ ۖ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
 خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ وَعَدَ اللَّهُ حَقًّا ۖ وَمَنْ أَصْدَقُ مِنَ اللَّهِ قِيلًا ۚ

और जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और अच्छे अच्छे काम किए उन्हें हम अनकरीब ही (बेहिश्त के) उन (हरे भरे) बाग़ों में जा पहुंचाएंगे जिनके (दरख्तों के) नीचे नहरें जारी होंगी और ये लोग उसमें हमेशा आबादुल आबाद तक रहेंगे (ये उनसे) खुदा का पक्का वायदा है और खुदा से ज्यादा (अपनी) बात में सच्चा कौन होगा

لَيْسَ بِأَمَانِيْكُمْ وَلَا أَمَانِيْ أَهْلِ الْكِتَابِ ۚ مَنْ يَعْمَلْ سُوءًا ۖ يُجْزَ بِهِ ۚ وَلَا يَجِدْ لَهُ ۚ
 مِّنْ دُونِ اللَّهِ وَلِيًّا ۖ وَلَا نَصِيرًا ۚ

न तुम लोगों की आरज़ू से (कुछ काम चल सकता है) न अहले किताब की तमन्ना से कुछ हासिल हो सकता है बल्कि (जैसा काम वैसा दाम) जो बुरा काम करेगा उसे उसका बदला दिया जाएगा और फिर खुदा के सिवा किसी को न तो अपना सरपरस्त पाएगा और न मददगार

وَمَنْ يَعْمَلْ مِنَ الصَّالِحَاتِ مِنْ ذَكَرٍ أَوْ أَنْتَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ ۖ فَأُو۟لَٰئِكَ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُونَ نَقِيرًا ۝۱

और जो शख्स अच्छे अच्छे काम करेगा (स्वाह) मर्द हो या औरत और ईमानदार (भी) हो तो ऐसे लोग बेहिश्त में (बेखटके) जा पहुँचेंगे और उनपर तिल भी जुल्म न किया जाएगा

وَمَنْ أَحْسَنُ دِينًا ۖ مِمَّنْ أَسْلَمَ وَجْهَهُ لِلَّهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ ۖ وَاتَّبَعَ مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا ۖ وَاتَّخَذَ اللَّهُ إِبْرَاهِيمَ خَلِيلًا ۝۱

और उस शख्स से दीन में बेहतर कौन होगा जिसने खुदा के सामने अपना सरे तसलीम झुका दिया और नेको कार भी है और इबराहीम के तरीके पर चलता है जो बातिल से कतरा कर चलते थे और खुदा ने इब्राहिम को तो अपना खलिस दोस्त बना लिया

وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيطًا ۝۱

और जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है (गरज़ सब कुछ) खुदा ही का है और खुदा ही सब चीज़ को (अपनी) कुदरत से घेरे हुए है

وَيَسْتَفْتُونَكَ فِي النِّسَاءِ ۚ قُلِ اللَّهُ يُفْتِيكُمْ فِيهِنَّ وَمَا يُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ فِي الْكِتَابِ فِي يَتِمَّى النِّسَاءِ الَّتِي لَا تُوْتُونَهُنَّ مَا كُتِبَ لَهُنَّ وَتَرْغَبُونَ أَنْ تَنْكِحُوهُنَّ وَالْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الْوِلْدَانِ وَأَنْ تَقُومُوا ۖ لِلْيَتَمَىٰ بِالْقِسْطِ ۚ وَمَا تَفْعَلُوا ۖ مِنْ خَيْرٍ ۖ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِهِ ۖ عَلِيمًا ۝۱

(ऐ रसूल) ये लोग तुमसे (यतीम लड़कियों) से निकाह के बारे में फ़तवा तलब करते हैं तुम उनसे कह दो कि खुदा तुम्हें उनसे (निकाह करने) की इजाज़त देता है और जो हुक्म मनाही का कुरान में तुम्हें (पहले) सुनाया जा चुका है वह हक़ीक़तन उन यतीम लड़कियों के वास्ते था जिन्हें तुम उनका मुअय्यन किया हुआ हक़ नहीं देते और चाहते हो (कि यूँ ही) उनसे निकाह कर लो और उन कमज़ोर नातवाँ (कमज़ोर) बच्चों के बारे में हुक्म फ़रमाता है और (वो) ये है कि तुम यतीमों के हुक्क के बारे में इन्साफ़ पर क़ायम रहो और (यक़ीन रखो कि) जो कुछ तुम नेकी करोगे तो खुदा ज़रूर वाकिफ़कार है

وَإِنْ أَمْرًا خَافَتْ مِنْ ۚ بَعْلِهَا نُشُوزًا أَوْ إِعْرَاضًا ۚ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا أَنْ يُصْلِحَا بَيْنَهُمَا صُلْحًا ۚ وَالصُّلْحُ خَيْرٌ ۚ وَأُحْضِرَتِ الْأَنْفُسُ الشُّحَّ ۚ وَإِنْ تُحْسِنُوا ۚ وَتَتَّقُوا ۚ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ۚ

और अगर कोई औरत अपने शौहर की ज्यादाती व बेतवज्जोही से (तलाक़ का) खौफ़ रखती हो तो मियाँ बीवी के बाहम किसी तरह मिलाप कर लेने में दोनों (में से किसी पर) कुछ गुनाह नहीं है और सुलह तो (बहरहाल) बेहतर है और बुख्त से तो करीब करीब हर तबियत के हम पहलू है और अगर तुम नेकी करो और परहेजदारी करो तो खुदा तुम्हारे हर काम से खबरदार है (वही तुमको अज़्र देगा)

وَلَنْ تَسْتَطِيعُوا ۚ أَنْ تَعْدِلُوا ۚ بَيْنَ النِّسَاءِ وَلَوْ حَرَصْتُمْ ۚ فَلَا تَمِيلُوا ۚ كُلُّ الْمِيلِ فَتَذَرُوهَا كَالْمُعَلَّقَةِ ۚ وَإِنْ تُصْلِحُوا ۚ وَتَتَّقُوا ۚ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُورًا ۚ رَحِيمًا ۚ

और अगरचे तुम बहुतेरा चाहो (लेकिन) तुममें इतनी सकत तो हरगिज़ नहीं है कि अपनी कई बीवियों में (पूरा पूरा) इन्साफ़ कर सको (मगर) ऐसा भी तो न करो कि (एक ही की तरफ़) हमातन माएल हो जाओ कि (दूसरी को अधड़ में) लटकी हुई छोड़ दो और अगर बाहम मेल कर लो और (ज्यादती से) बचे रहो तो खुदा यकीनन बड़ा बख्शने वाला मेहरबान है

وَإِنْ يَتَفَرَّقَا يُغْنِ اللَّهُ كُلًّا ۚ مِّنْ سَعَتِهِ ۚ ۚ وَكَانَ اللَّهُ وَسِعًا حَكِيمًا ۚ

और अगर दोनों मियाँ बीवी एक दूसरे से बाज़रिए तलाक़ जुदा हो जाएं तो खुदा अपने वसी खज़ाने से (फ़रागुल वाली अता फ़रमाकर) दोनों को (एक दूसरे से) बेनियाज़ कर देगा और खुदा तो बड़ी गुन्जाइश और तदबीर वाला है और जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है (गरज सब कुछ) खुदा ही का है

وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ وَلَقَدْ وَصَّيْنَا الَّذِينَ أُوتُوا ۚ الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَإِيَّاكُمْ أَنْ اتَّقُوا ۚ اللَّهَ ۚ فَإِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ غَنِيًّا حَمِيدًا ۚ

और जिन लोगों को तुमसे पहले किताबे खुदा अता की गयी है उनको और तुमको भी उसकी हमने वसीयत की थी कि (खुदा) (की नाफ़रमानी) से डरते रहो और अगर (कहीं) तुमने कुफ़्र इस्तेयार किया तो (याद रहे कि) जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है (गरज सब कुछ) खुदा ही का है (जो चाहे कर सकता है) और खुदा तो सबसे बेपरवा और (हमा सिक़त) मौसूफ़ हर हम्द वाला है

وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ وَكَفَى بِاللَّهِ وَكِيلًا

जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है (गरज सब कुछ) खास खुदा ही का है और खुदा तो कारसाज़ी के लिये काफ़ी है

إِنْ يَشَأْ يُذْهِبْكُمْ أَيُّهَا النَّاسُ وَيَأْتِ بِآخَرِينَ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ ذَٰلِكَ قَدِيرًا ۝

ऐ लोगों अगर खुदा चाहे तो तुमको (दुनिया के परदे से) बिल्कुल उठा ले और (तुम्हारे बदले) दूसरों को ला (बसाए) और खुदा तो इसपर क़ादिर व तवाना है

مَنْ كَانَ يُرِيدُ ثَوَابَ الدُّنْيَا فَعِنْدَ اللَّهِ ثَوَابُ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ سَمِيعًا ۝
بَصِيرًا ۝

और जो शख्स (अपने आमाल का) बदला दुनिया ही में चाहता है तो खुदा के पास दुनिया व आखिरत दोनों का अज़्र मौजूद है और खुदा तो हर शख्स की सुनता और सबको देखता है

ۚ يَأَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ كُونُوا ۚ قَوْمِينَ بِالْإِقْصٰطِ شُهَدَآءَ لِلّٰهِ وَلَوْ عَلَىٰٓ أَنْفُسِكُمْ أَوِ
الْوَلَدَيْنِ وَالأَقْرَبِينَ ۚ إِنْ يَكُنْ غَنِيًّا أَوْ فَقِيرًا ۖ فَاللَّهُ أَوْلَىٰ بِهِمَا ۚ فَلَا تَتَّبِعُوا
الْهَوَىٰٓ أَنْ تَعْدِلُوا ۚ وَإِنْ تَلُوتُوا ۖ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ
خَبِيرًا ۝

ऐ ईमानवालों मज़बूती के साथ इन्साफ़ पर कायम रहो और खुदा के लिये गवाही दो अगरचे (ये गवाही) खुद तुम्हारे या तुम्हारे माँ बाप या क़राबतदारों के लिए खिलाफ़ (ही क्यों) न हो ख़्वाह मालदार हो या मोहताज़ (क्योंकि) खुदा तो (तुम्हारी बनिस्बत) उनपर ज़्यादा मेहरबान है तो तुम (हक़ से) कतराने में ख़्वाहिशे नफ़सियानी की पैरवी न करो और अगर घुमा फिरा के गवाही दोगे या बिल्कुल इन्कार करोगे तो (याद रहे जैसी करनी वैसी भरनी क्योंकि) जो कुछ तुम करते हो खुद उससे खूब वाकिफ़ है

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ ءَامِنُوا ۚ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ۚ وَالْكِتَابِ الَّذِي نَزَّلَ عَلَىٰ رَسُولِهِ ۚ
وَالْكِتَابِ الَّذِي أُنْزِلَ مِنْ قَبْلُ ۚ وَمَنْ يَكْفُرْ بِاللَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ ۚ وَكُتُبِهِ ۚ وَرُسُلِهِ ۚ وَالْيَوْمِ
الْآخِرِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَالًا ۚ ا۝١٢٦

ऐ ईमानवालों खुदा और उसके रसूल (मोहम्मद) पर और उसकी किताब पर जो उसने अपने रसूल (मोहम्मद) पर नाज़िल की है और उस किताब पर जो उसने पहले नाज़िल की ईमान लाओ और (ये भी याद रहे कि) जो शख्स खुदा और उसके फ़रिश्तों और उसकी किताबों और उसके रसूलों और रोज़े आखिरत का मुन्किर हुआ तो वह राहे रास्त से भटक के ज़ूर जा पड़ा

إِنَّ الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ ثُمَّ كَفَرُوا ۚ ثُمَّ ءَامَنُوا ۚ ثُمَّ كَفَرُوا ۚ ثُمَّ أَرَادُوا ۚ كُفْرًا ۚ ا۝١٢٧ لَمْ يَكُنِ
اللَّهُ لِيَغْفِرْ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ سَبِيلًا ۚ ا۝١٢٨

बेशक जो लोग ईमान लाए उसके बाद फिर काफ़िर हो गए फिर ईमान लाए और फिर उसके बाद काफ़िर हो गये और कुफ़्र में बढ़ते चले गए तो खुदा उनकी मज़फ़िरत करेगा और न उन्हें राहे रास्त की हिदायत ही करेगा

بَشِّرِ الْمُنَافِقِينَ بِأَنَّ لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا

(ऐ रसूल) मुनाफ़िकों को खुशख़बरी दे दो कि उनके लिए ज़रूर दर्दनाक अज़ाब है

الَّذِينَ يَتَّخِذُونَ الْكَافِرِينَ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ ۚ أَيْبَتُهُمْ عِنْدَهُمُ الْعِزَّةَ فَإِنَّ
الْعِزَّةَ لِلَّهِ جَمِيعًا ۚ ا۝١٣٩

जो लोग मोमिनों को छोड़कर काफ़िरों को अपना सरपरस्त बनाते हैं क्या उनके पास इज्ज़त (व आबरू) की तलाश करते हैं इज्ज़त सारी बस खुदा ही के लिए खास है

وَقَدْ نَزَّلَ عَلَيْكُمْ فِي الْكِتَابِ أَنْ إِذَا سَمِعْتُمْ آيَاتِ اللَّهِ يُكْفَرُ بِهَا وَيُسْتَهْزَأُ بِهَا فَلَا تَقْعُدُوا ۚ مَعَهُمْ حَتَّىٰ يَخُوضُوا ۚ فِي حَدِيثٍ غَيْرِهِ ۚ ۚ إِنَّكُمْ إِذًا ۚ مِثْلُهُمْ ۚ ۚ إِنَّ اللَّهَ جَامِعُ الْمُنَافِقِينَ وَالْكَافِرِينَ فِي جَهَنَّمَ جَمِيعًا

(मुसलमानों) हालाँकि खुदा तुम पर अपनी किताब कुरान में ये हुक्म नाज़िल कर चुका है कि जब तुम सुन लो कि खुदा की आयतों से ईन्कार किया जाता है और उससे मसखरापन किया जाता है तो तुम उन (कुफ़ार) के साथ मत बैठो यहाँ तक कि वह किसी दूसरी बात में ग़ौर करने लगें वरना तुम भी उस वक्त उनके बराबर हो जाओगे उसमें तो शक ही नहीं कि खुदा तमाम मुनाफ़िकों और काफ़िरों को (एक न एक दिन) जहन्नुम में जमा ही करेगा

الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ بِكُمْ فَإِنْ كَانَ لَكُمْ فَتْحٌ ۚ مِّنَ اللَّهِ قَالُوا ۚ أَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ وَإِنْ كَانَ لِلْكَافِرِينَ نَصِيبٌ ۚ قَالُوا ۚ أَلَمْ نَسْتَحِذْ عَلَيْكُمْ وَنَمْنَعُكُم مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ ۚ فَاللَّهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۚ وَلَن يَجْعَلَ اللَّهُ لِلْكَافِرِينَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ سَبِيلًا

(वो मुनाफ़ेकीन) जो तुम्हारे मुन्तज़िर है (कि देखिए फ़तेह होती है या शिकस्त) तो अगर खुदा की तरफ़ से तुम्हें फ़तेह हुई तो कहने लगे कि क्या हम तुम्हारे साथ न थे और अगर (फ़तेह का) हिस्सा काफ़िरों को मिला तो (काफ़िरों के तरफ़दार बनकर) कहते हैं क्या हम तुमपर ग़ालिब न आ गए थे (मगर क़सदन तुमको छोड़ दिया) और तुमको मोमिनीन (के हाथों) से हमने बचाया नहीं था (मुनाफ़िकों) क़यामत के दिन तो खुदा तुम्हारे दरमियान फैसला करेगा और खुदा ने काफ़िरों को मोमिनीन पर वर (ऊँचा) रहने की हरगिज़ कोई राह नहीं करार दी है

إِنَّ الْمُنَافِقِينَ يُخَدِعُونَ اللَّهَ وَهُوَ خَدِيعُهُمْ وَإِذَا قَامُوا ۚ إِلَى الصَّلَاةِ قَامُوا ۚ كُسَالَىٰ ۚ يُرَآءُونَ النَّاسَ وَلَا يَذْكُرُونَ اللَّهَ إِلَّا قَلِيلًا ۚ ۚ

बेशक मुनाफ़िकीन (अपने ख्याल में) खुदा को फरेब देते हैं हालाँकि खुदा खुद उन्हें धोखा देता है और ये लोग जब नमाज़ पढ़ने खड़े होते हैं तो (बे दिल से) अलकसाए हुए खड़े होते हैं और सिर्फ़ लोगों को दिखाते हैं और दिल से तो खुदा को कुछ यूँ ही सा याद करते हैं

مُذَبِّبِينَ بَيْنَ ذَلِكَ لَا إِلَى هَؤُلَاءِ وَلَا إِلَى هَؤُلَاءِ ۚ وَمَنْ يُضْلِلِ اللَّهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهُ سَبِيلًا ۚ

इस कुफ़र व ईमान के बीच अधड़ में पड़े झूल रहे हैं न उन (मुसलमानों) की तरफ़ न उन काफ़िरों की तरफ़ और (ऐ रसूल) जिसे खुदा गुमराही में छोड़ दे उसकी (हिदायत की) तुम हरगिज़ सबील नहीं कर सकते

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ لَا تَتَّخِذُوا ۚ الْكَافِرِينَ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ ۚ أَتُرِيدُونَ أَنْ تَجْعَلُوا ۚ لِلَّهِ عَلَيْكُمْ سُلْطَانًا مُبِينًا

ऐ ईमान वालों मोमिनीन को छोड़कर काफ़िरों को (अपना) सरपरस्त न बनाओ क्या ये तुम चाहते हो कि खुदा का सरीही इल्ज़ाम अपने सर कायम कर लो

إِنَّ الْمُنَافِقِينَ فِي الدَّرَكِ الْأَسْفَلِ مِنَ النَّارِ وَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ نَصِيرًا

इसमें तो शक ही नहीं कि मुनाफ़िक जहन्नूम के सबसे नीचे तबके में होंगे और (ऐ रसूल) तुम वहाँ किसी को उनका हिमायती भी न पाओगे

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا ۚ وَأَصْلَحُوا ۚ وَاعْتَصَمُوا ۚ بِاللَّهِ وَأَخْلَصُوا ۚ دِينَهُمْ لِلَّهِ فَأُولَٰئِكَ ۚ مَعَ الْمُؤْمِنِينَ ۚ وَسَوْفَ يُؤْتِ اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ أَجْرًا عَظِيمًا ۚ

मगर (हाँ) जिन लोगों ने (निफ़ाक़ से) तौबा कर ली और अपनी हालत दुरूस्त कर ली और खुदा से लगे लिपटे रहे और अपने दीन को महज़ खुदा के वास्ते निरा खरा कर लिया तो ये लोग मोमिनीन के साथ (बेहिश्त में) होंगे और मोमिनीन को खुदा अनक़रीब ही बड़ा (अच्छा) बदला अता फ़रमाएगा

مَا يَفْعَلُ اللَّهُ بِعَذَابِكُمْ إِنْ شَكَرْتُمْ وَءَامَنْتُمْ ۚ وَكَانَ اللَّهُ شَاكِرًا عَلِيمًا ۚ

अगर तुमने खुदा का शुक्र किया और उसपर ईमान लाए तो खुदा तुम पर अज़ाब करके क्या करेगा बल्कि खुदा तो (खुद शुक्र करने वालों का) क़दरदौ और वाक़िफ़कार है